प्रातः क्लास 9-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। भक्ति मार्ग में परमपिता परमात्मा शिव को यहां ही पूजते हैं, भल बुधि में है कि यह होकर गये हैं, जहां भी लिंग देखते हैं तो उनकी पूजा करते हैं। यह तो समझते हैं शिव परमधाम में रहने वाला है। होकर गये हैं इसलिये उनका यादगार बनाकर पूजते हैं। जिस समय याद किया जाता है तो वह बुधि में जरूर आता है निराकार शिव परमधाम में रहने वाला है। वहां ही उनको शिव कह पूजते हैं क्योंकि आत्मा है। अभी तुम्हारे आगे तो प्रतिमा है नहीं। भक्ति मार्ग वालों के आगे प्रतिमा है। मंदिर आदि में जाकर माथा टेकते हैं, शिव बाबा कह पूजा करते हैं और उन पर दूध फल-फूल आदि चढ़ाते हैं। परन्तु वह तो जड़ है। जड़ चीज़ की ही भक्ति की जाती है। अभी तुम बच्चे तो जानते हो वह है चैतन्य। उनका निवास स्थान परमधाम में है। वह जब पूजा करते हैं तो बुधि में रहता है परमधाम निवासी है। होकर गये हैं तब यह चित्र बनाया गया है। जिसकी पूजा करते हैं। वह चित्र कोई शिव नहीं है प्रतिमा है। जो भक्ति मार्ग में उनको पूजा जाता है। वैसे ही देवताओं को भी पूजते हैं। जड़ चित्र है। चैतन्य नहीं है। परन्तु वह चैतन्य जो थी वह कहां गये यह नहीं समझते हैं। जरूर पुनर्जन्म ले नीचे आये होंगे। अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है। समझते हो जो भी पूज्य देवतायें थे वह पुनर्जन्म लेते आये हैं। आत्मा वही है। आत्मा का नाम नहीं फिरता। बाकी शरीर का नाम फिरता है। वह आत्मा कोई न कोई वेशरीर में है। पुनर्जन्म तो लेना ही है। तुम पूजते हो जो पहले2 शरीर वाले थे। सतयुगी ल०ना० को पूजते हो। इस समय तुम्हारा ख्याल चलता है, जो नालेज बाप देते हैं, तो तुम समझते हो जिस चित्र की पूजा करते हैं वह तो पहले2 वाला है। चैतन्य थे। यहां ही भारत में थे। अभी नहीं हैं। मनुष्य यही नहीं समझते कि वह पुनर्जन्म लेते2 84 जन्मों का पार्ट बजाते हैं। यह किसके ख्याल में भी नहीं आता। सतयुग में तो थे जरूर परन्तु अभी नहीं हैं। यह भी किसको समझ में नहीं आती। अभी तुम समझते हो, ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर चैतन्य में आवेंगे जरूर। मनुष्यों की बुधि में यह ख्याल भी नहीं आता। बाकी इतना जरूर समझते हैं कि यह थे। अभी उनका जड़ चित्र है। परन्तु वह चैतन्य चीज़ कहां चली गई यह किसकी भी बुधि में नहीं आता। मनुष्य जो 84 लाख पुनर्जन्म कह देते हैं, यह भी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है कि 84 जन्म ही लेते हैं न कि 84 लाख। अभी रामचन्द्र की पूजा करते हैं उनको भी यह पता नहीं है कि राम कहां गया। यह तुम बच्चे ही समझते हो राम की आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी यहां। इम्तहान में नापास होते हैं परन्तु कोई न कोई रूप में होंगे तो जरूर ना। यहां ही पुरुषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम वाला जो है राम का सो जरूर आवेंगे उनको नालेज लेनी पड़ेगी। अभी कुछ भी मालूम नहीं पड़ता है। इन बातों में जाने से भी टाईम वेस्ट होता है। इससे तो क्यों नहीं हम अपना टाईम सफल करें। अपनी उन्नति के लिये बैटरी चार्ज करें। वह तो हो जाता है परचिन्तन। अभी तो अपना ही चिन्तन करना है। हम बाप को याद करें। वह भी जरूर पढ़ते होंगे, अभी अपनी बैटरी चार्ज करते होंगे। परन्तु तुमको तो अपना करना है। अपनी घोट तो नशा चढ़े। ऐसी2 बातों में टाईम वेस्ट न करना है। परचिन्तन बन्द। भक्ति मार्ग में परचिन्तन बहुत होता है। हमको तो बाप को याद करना है। बाप ने कहा है जब तुम सतोप्रधान थे तो तुम्हारा बहुत ही ऊंच पद था। अभी फिर पुरुषार्थ करो। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो। मंजिल है। टाईम वेस्ट नहीं करना है परचिन्तन में। सिर्फ एक बाप को याद करो। और विचारों में भी मत जाओ। यह पद पाना है तो बाप को याद करना पड़े। निरन्तर याद करते करते विकर्म विनाश होंगे। यही चिन्तन करते2 सतोप्रधान बन जावेंगे। नारायण का ही सिमरण हम नारायण बनेंगे। अन्त काल जो नारायण सिमरे ..... तुमको तो बाप को याद करना है जिससे पाप कटे। फिर ना० बनें। यह नर से ना० बनने की हाईयेस्ट युक्ति है। एक ना० तो नहीं बनेगा ना। यह तो सारी डिनायस्टी बननी है। बाप हाईयेस्ट पुरुषार्थ करावेंगे। यह है ही राजयोग की नालेज। सो भी पूरा विश्व का मालिक बनना है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना फायदा जरूर है। एक तो अपने को आत्मा जरूर निश्चय करो। –

कोई कोई लिखते हैं फलानी आत्मा आप को याद करती है। आत्मा शरीर द्वारा लिखती है। आत्मा का कनेक्शन है शिव बाबा साथ। मैं आत्मा मैं फलाने शरीर के नाम रूप वाली ···· यह तो जरूर बताना पड़े ना। क्योंकि आत्मा का शरीर पर ही भिन्न2 नाम पड़ते हैं। मैं आत्मा आप का बच्चा हूं। मुझ आत्मा के शरीर का नाम फलाना है। आत्मा का नाम तो कब लिखता नहीं। मैं आत्मा फलाने शरीर वाले। शरीर का नाम तो जरूर चाहिए। नहीं तो कारोबार चल न सके। यहां बाप कहते हैं मैं भी इस ब्रह्मा के तन में आता हूं टेम्परेरी। इनकी आत्मा को भी समझाते हैं। यह 100 वर्ष बाद शरीर छोड़ देंगे। परम आत्मा की तो कोई आयु है नहीं। समझाते हैं तुम्हारे इस दादा की आयु 100 वर्ष गाई जाती है फिर यह शरीर छोड़ देंगे। मैं इस शरीर से तुमको पढ़ाने आया हूं। यह मेरा नहीं है। मैं ने इनमें प्रवेश किया है। फिर चले जावेंगे। अपने धाम। मैं आया हूं तुम बच्चों को यह मंत्र देने। ऐसे नहीं कि मंत्र दे और चला जाता हूं। बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहां तक सुधरे और फिर सुधारते हैं। सेकण्ड का ज्ञान दे चला जाये तो फिर ज्ञान का सागर नहीं कहा जाये। कितना समय हुआ है तुमको समझाते ही रहते हैं। झाड़ की, भक्ति मार्ग की सभी बातें समझने की है। डिटेल में समझाते है। होलसेल माना मन्मनाभव। परन्तु ऐसे कह चले तो नहीं जावेंगे। तारना भी करनी पड़े। कई बच्चे बाप को याद करते2 फिर गुम हो जाते हैं। फलानी आत्मा जिसका नाम फलाना था, बहुत अच्छा पढ़ता था, स्मृति तो आवेगी ना। पुराने2 बच्चे कितने अच्छे थे उनको माया ने हप कर लिया। शुरू में कितने थे, फट से आकर बाप की गोद ली। भट्ठी बनी। उसमें सभी ने अपना लक अजमाया। फिर लक अजमाते2 माया ने एकदम उड़ा दिया। ठहर न सके। फिर 5000 वर्ष बाद भी ऐसे ही होगा। कितने चले गये। आधा झाड़ तो जरूर गया। भल झाड़ अभी वृद्धि को बहुत पाया है परन्तु पुराने चले गये। समझ सकते हैं उनसे फिर आवेंगे जरूर पढ़ने। स्मृति आवेगी कि हम बाप से पढ़ते थे। और सभी तो अभी तक पढ़ते रहते हैं हमने हार खाली। फिर मैदान में आवेंगे। बाबा आने ~~र~~ देंगे। फिर भी भल आकर पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ करे तो कुछ न कुछ उच्च पद मिल जावेगा। बाप स्मृति दिलाते हैं अभी कैसे याद करते हो। क्या यह समझते हो बाबा परमधाम में ~~र~~ है। नहीं। बाबा तो यहां रथ में बैठे हैं। इस रथ का सभी को मालूम पड़ जाता है। यह है भाग्यशाली रथ। उनमें आया हुआ है। भक्ति मार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे। परन्तु यह नहीं जानते थे कि याद से क्या होगा। अभी तुम बच्चों को बाप खुद इस रथ में बैठ श्रीमत देते हैं। इसलिये ही तुम बच्चे समझते हो बाबा यहां इस मृत्युलोक में पुरुषोत्तम संगम युग पर है। तुम जानते हो हमको ब्रह्मा को याद नहीं करना है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। मैं इस रथ में तुमको यह नालेज दे रहा हूं। अपनी भी पहचान देता हूं। मैं यहां हूं। आगे तो तुम समझते थे परमधाम में ~~रहने~~ रहने वाला है। जो कर गया है, परन्तु कब, यह पता न था। होकर तो सभी गये हैं ना। जिनके भी चित्र हैं। अभी वे कहां हैं यह किसको भी पता नहीं है। जो जाते हैं वह फिर अपने समय ही पर ~~आते~~ आते हैं। भिन्न2 पार्ट बजाते रहते हैं। स्वर्ग में तो कोई जाते ही नहीं। बाप ने समझाया है स्वर्ग में जाने लिये तो पुरुषार्थ करना होता है। और पुरानी दुनिया का अन्त, नई दुनिया का आदि चाहिए जिसको पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है। यह ज्ञान भी तुमको है। मनुष्य कुछ नहीं जानते। समझते भी हैं शरीर जल जाता है बाकी आत्मा चली जाती है। अभी कलियुग है तो जरूर पुनर्जन्म भी कलियुग में ही लेंगे। सतयुग में थे तो जन्म भी सतयुग में लेते थे। यह तो समझते हो आत्माओं का सारा स्टाक निराकारी दुनिया में होता है। यह तो बुधि में बैठता है ना। यह तो बुधि में बैठता है ना। फिर वहां से आते हैं, यहां शरीर धारण कर जीवात्मा बन जाते हैं। सभी को यहां आकर जीवात्मा बनना ही है। फिर नम्बरवार वापिस जानी है। सभी को इकट्ठा तो नहीं ले जावेंगे। फिर तो प्रलय हो जाये। दिखलाते हैं प्रलय हो गई। रिजल्ट कुछ नहीं दिखाते। तुम तो जानते हो यह दुनिया कब खाली नहीं हो सकती। गायन है राम गयो रावण गयो जाके बहुपरिवार। सारी दुनिया में रावण सम्प्रदाय है ना। राम सम्प्रदाय

- तो बहुत ही थोड़े हैं। राम की सम्प्रदाय है ही सतयुग त्रेता में। बहुत फर्क रहता है। बाद में फिर और 2 डास्टर टारियां निकलती हैं। अभी तुमने बीज और झाड़ को भी जाना है। बाप सभी कुछ जानते हैं तब तो सुनाते रहते हैं। इसलिये उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। एक बात अगर होती तो फिर कुछ शास्त्र आदि भी बन न सके। झाड़ की डिटेल भी समझाते हैं। मूल बात नम्बरवन सबजेक्ट है बाप को याद करना। इसमें ही मेहनत है। इसपर ही सारा मदार है। बाकी झाड़ को तो तुम जान गये हो। दुनिया में इन बातों को कोई भी नहीं जानते। तुम सभी धर्म वालों की तिथ तारीख आदि सभी बताते हैं। आधा कल्प में यह सभी आ जाते हैं। बाकी है सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। इनके लिये बहुत युग तो नहीं होंगे ना। है ही दो युग। वहां मनुष्य भी थोड़े ही होते हैं। 84 लाख जन्म तो हो भी न सके। मनुष्य समझ से ही बाहर हो जाते हैं। इसलिए फिर बाप आकर समझ देते हैं। समझ से जो बाहर जाता है उनको बेसमझ कहा जाता है। नम्बरवन गपोड़ा लगाया है ईश्वर सर्वव्यापी का। और 84 लाख जन्मों का। बाप कहते हैं यह सभी है अज्ञान। अज्ञान की एक्टिविटी को भक्ति कहा जाता है। ज्ञान की एक्टिविटी को ज्ञान कहा जाता है। वह दिन वह रात।

बाप जो रचयिता है वही रचना के आदि मध्य अन्त का नालेज बैठ देते हैं। भारतवासी तो बिल्कुल ही कुछ नहीं जानते। सभी को पूजते रहते हैं। मुसलमान को, पारसी को, जो आया उनको पूजने लग पड़ते हैं। क्योंकि अपने धर्म और धर्म स्थापक को ही भूल गये हैं। और सभी तो अपने अपने धर्म को जानते हैं। और सभी को मालूम है फलाने धर्म कब, किसने स्थापन किये। बाकी सतयुग त्रेता की हिस्ट्री जागराफे का किसको भी पता नहीं है। चित्र भी देखते हैं, शिव बाबा का भी चित्र है। वही उच्च ते उच्च बाप है। तो याद भी उनको करना है ना। यहां फिर सबसे जास्ती पूजा करते हैं कृष्ण की। क्योंकि नेक्ट में है ना। प्यार भी सभी उनको ही करते हैं। तो गीता का भगवान भी उनको ही समझ लिया है। सुनाने वाला तो चाहिए ना तब तो उन से वरसा मिले। बाप ही सुनाते हैं। नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराने वाला भी बाप के सिवाय कोई और हो न सके। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना यह भी लिखते हैं ना। यहां के लिये ही हैं। परन्तु समझ कुछ भी है नहीं। यह भी तुम अभी समझते हो वह है निराकारी सृष्टि। यह है साकारी सृष्टि। सृष्टि तो एक ही है। यहां ही रामराज्य और रावण राज्य होता है। महिमा तो सारी यहां की ही है। बाकी सूक्ष्मवतन क्या है। कुछ भी नहीं। यह सिर्फ साक्षात्कार होता है। मूलवतन में तो आत्मायें निवास करती हैं। फिर यहां आकर पार्ट बजाती हैं। बाकी सूक्ष्मवतन में क्या है? यह चित्र बना दिया है जिस पर बाप बैठ समझाते हैं। यह हैं फरिश्ते। तुम बच्चों को यह फरिश्ता बनना है। फरिश्ते बिगर हड्डी मांस होते हैं। कहते हैं ना दधीचि ऋषि ने हड्डियां भी दे दी। बाकी शंकर का तो गायन है नहीं। ब्रह्मा, विष्णु का मंदिर है। शंकर का कुछ भी है नहीं। तो उनको लगा दिया है विनाश के लिये। बाकी कोई ऐसे खोलने से विनाश करता नहीं है। देवतायें फिर हिंसा का काम कैसे करेंगे। न वह करते हैं- न शिव बाबा ऐसा डायरेक्शन ही देते हैं। डायरेक्शन देने वाले पर भी आ जाता है ना, कहने वाला भी फंस जाता। वह तो शिव शंकर को ही इकट्ठा कर दिया है। अभी बाप भी कहते हैं मुझे याद करो। ऐसा तो नहीं कहते शिव शंकर को याद करो। पतित-पावन भी एक को ही कहते हैं। भगवान इस रथ द्वारा बैठ समझाते हैं यह तो कोई भी नहीं जानते हैं। तो यह चित्र देख मुंझ पड़ते हैं। रथ तो जरूर दिखाना पड़े। समझने में टाईम लगता है। कोटों में कोऊ विरला ही निकलते हैं। मैं जो हूं जैसा हूं कोटों में कोऊ ही पहचानते हैं। क्योंकि गुप्त वेष में है ना।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?